महामंत्री चाणक्य

अमरनाथ शुक्ल

चंद्रगुप्त मौर्य का शासन काल भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल था। इस काल में भारत का यश-वैभव चारों दिशाओं में फैला था । चंद्रगुप्त को गड़रिया-पुत्र से सम्राट बनाने का कार्य आचार्य चाणक्य ने किया । चाणक्य अपनी धुन के पक्के थे-वे जो बात एक बार ठान लेते, उसे पूरी करके ही रहते थे । वे तपस्वी थे, सीधा-सादा जीवन व्यतीत करते थे । चंद्रगुप्त को सम्राट बनाने के बाद देश को नया और मजबूत रूप देने के लिए चाणक्य स्वयं ही महामंत्री बने ।

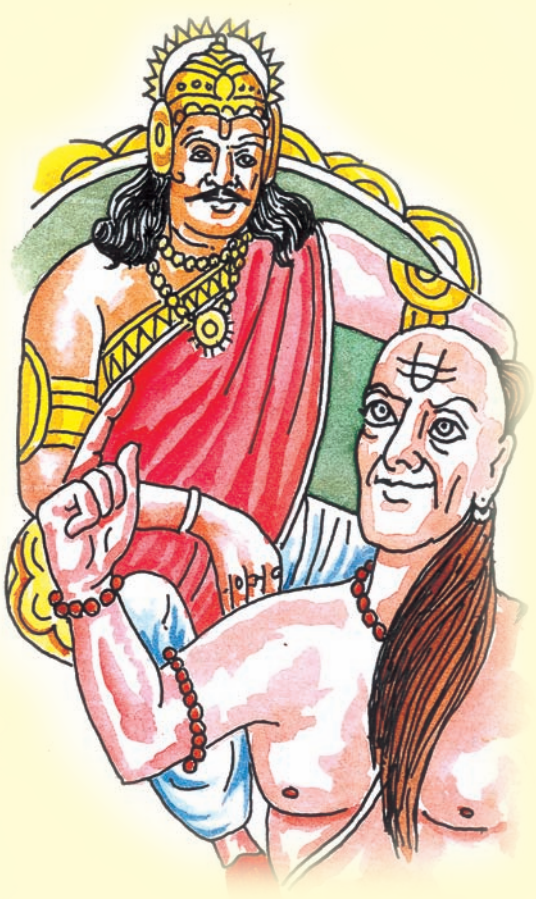

इस त्यागी महापुरुष की तपस्या का फल भारत को मिला । भारत और भी अधिक-सम्पन्न बना । दूर-दूर के देशों तक भारत की कीर्ति फैलने लगी । उसी काल में यूनानी दूत मेगस्थनीज़ भारत आया । भारत की अच्छी व्यवस्था तथा देश की जनता की खुशहाली देखकर वह बहुत अधिक प्रभावित हुआ । उसने चाणक्य की बहुत प्रशंसा सुनी थी । उसने सम्राट चंद्रगुप्त से एक बार महामंत्री चाणक्य से मिलने की इच्छा प्रकट की ।

एक दिन सम्राट चंद्रगुप्त मेगस्थनीज़ को साथ लेकर एक साधारण से आश्रम में पहुँचे। उन्होंने द्वार पर जूते उतार कर अंदर प्रवेश किया । सामने चटाई पर एक व्यक्ति अपने विचारों में खोया बैठा था । उसके हाथ में लेखनी थी और सामने चौकी पर कुछ भोजपत्र थे । उसका रंग काला था, गाय की पूँछ के बराबर चोटी के अलावा सिर मुडा था। कमर के नीचे का भाग एक धोती से लिपटा था, शेष शरीर पर कोई वस्त्र नहीं था, वह मोटा जनेऊ पहने था । उसके चेहरे से यह अवश्य मालूम पड़ता था कि वह कोई महान व्यक्ति है और अपनी लगन का पक्का है ।

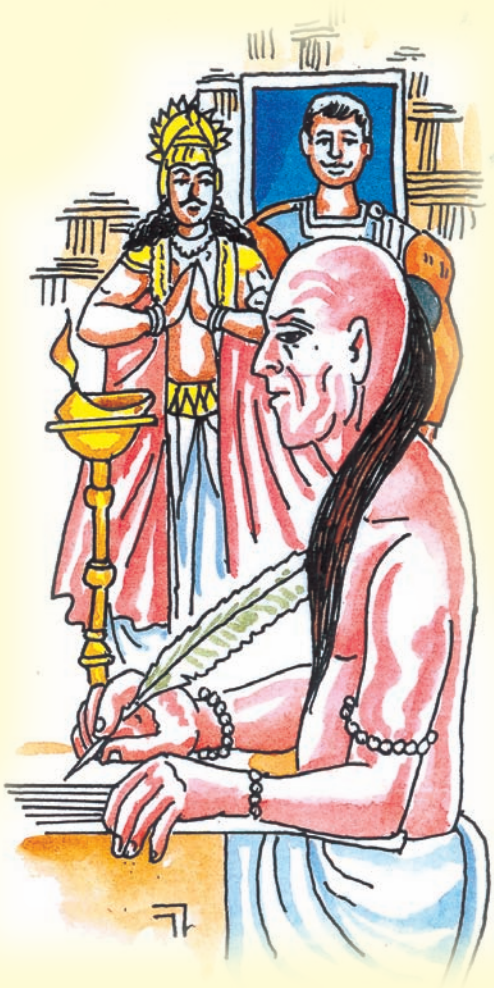

उसे प्रणाम कर सम्राट और मेगस्थनीज़ दोनों चटाई पर बैठ गए । उसने एक बार दोनों को आँख उठाकर देखा, फिर अपने काम में लग गया । थोड़ी देर बाद मेगस्थनीज़ सहित सम्राट चंद्रगुप्त अपने महल में लौट आये ।

वापस आने पर मेगस्थनीज़ ने प्रश्न किया, सम्राट ! आज तो आप महामंत्री से मिलने वाले थे ।

हँसकर सम्राट ने कहा, 'वे महामंत्री ही थे, जिनके पास हम आपके साथ गये थे।'

मेगस्थनीज़ यह सुनकर आश्चर्यचकित हो गया । वह सोचने लगा, इतने विराट और वैभव-सम्पन्न राष्ट्र का महामंत्री एक झोपड़ी में रहता है और सम्राट उसे प्रणाम करते हैं जबकि वह कुछ बोलता तक नहीं ।

फिर उसने सम्राट से निवेदन किया, मैं इस महापुरुष से दोबारा मिलना चाहता हूँ। उनसे मेरी भेंट कराने की कृपा करें ।

चाणक्य ने मेगस्थनीज़ को मिलने का समय दे दिया । निश्चित समय पर मेगास्थनीज उनकी सेवा में पहुँचा । महामंत्री सदैव की तरह अपने काम में व्यस्त थे । मेगस्थनीज़ के पहुँचने पर उन्होंने एक दीपक बुझा दिया और दूसरा दीपक जला दिया और बोले, 'आपकी क्या सेवा करूँ ?'

मेगस्थनीज़ का आश्चर्य बढ़ा, उसने कहा, जिज्ञासाएँ तो बहुत-सी हैं, लेकिन अब एक नयी जिज्ञासा उत्पन्न कर दी आपने । आपने एक दीपक क्यों बुझा दिया और दूसरा क्यों जला दिया ?'

चाणक्य ने अत्यन्त सरलता से उत्तर दिया, 'अभी तक मैं महामंत्री की हैसियत से राष्ट्र का काम कर रहा था । अब मैं चाणक्य की हैसियत से आपसे निजी बातचीत कर रहा हूँ । उस दीपक में राष्ट्र का तेल है । निजी कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्पति का उपयोग करना तो घोर अपराध है । यदि नियम-कानून बनाने वाले ही उन नियमों को तोड़ेंगे, तो उनका पालन अधिकारियों और जनता से कैसे कराएँगे ?'

चाणक्य के कथन को सुनकर मेगस्थनीज़ गद्‌गद्‌ हो गया । उसका रोम-रोम इस महान्‌ तपस्वी को प्रणाम कर रहा था । उसका शीश झुक गया और उसके मुख से निकला, 'धन्य है यह देश जहाँ आप जैसे महामंत्री हैं । सम्राट से आपके विषय में सुना था और अब अच्छी तरह जान गया हूँ । आपके देश की उन्नति में आपके चरित्र की प्रेरणा मुख्य है । केवल एक प्रश्न के उत्तर से मेरी सारी जिज्ञासाएँ शान्त हो गई हैं।

शब्दार्थ :

स्वर्णकाल - सर्वश्रेष्ठ काल;

गद्‌गद्‌ होना - बहुत प्रसन्न होना;

नमन - प्रणाम;

यश-वैभव - नाम और धन दौलत;

जिज्ञासा - जानने की इच्छा;

धुन का पक्का - दृढ निश्चय वाला;

विराट - विशाल;

वैभव-सम्पन्न - समृद्धिशाली;

भोजपत्र - प्राचीन काल में एक विशेष पेड़ 'भोज' का पत्ता, उस पर कागज़ की तरह लिखा जाता था ।

अनुशीलनी

समझो और लिखो :

(क) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो:

(i) किसके शासन काल को भारत के इतिहास का स्वर्णकाल कहते हैं और क्यों ?

(ii) चाणक्य कौन थे ? उनके जीवन के विषय में पाँच वाक्य लिखो ।

(iii) किसकी तपस्या से भारत की कीर्ति दूर-दूर तक फैली ?

(iv) यूनानी राजदूत मेगस्थनीज़ ने किससे मिलने की इच्छा प्रकट की ?

(v) चाणक्य से भेंट होने पर मेगस्थनीज़ पर क्या प्रभाव पड़ा ?

२. नीचे लिखे वाक्यों के सही अन्त चुनो:

(i) मेगस्थानीज़ के पहुँचने पर चाणक्य ने दीपक बुझा दिया, क्योंकि

- वह बेकार ही दीपक नहीं जलाना चाहते थे ।
- दीपक में तेल बहुत ही कम रह गया था ।
- उस दीपक में राष्ट्र का तेल था और वे निजी कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्पत्ति का उपयोग करना घोर अपराध मानते थे ।

(ii) चंद्रगुप्त मौर्य का शासन काल भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल था, क्योंकि-

- इस काल में दूर-दूर से विदेशी पर्यटक भारत में आये।
- इस काल में भारत का यश-वैभव चारों दिशाओं में फैला ।
- इस काल में भारत ने बहुत समृद्धि प्राप्त की ।

(iii) चाणक्य एक आश्रम में, एक साधारण ब्राह्मण जैसे रहते थे, क्योंकि
- वे एक त्यागी महापुरुष थे ।
- उन्हें यश-वैभव का मोह नहीं था ।
- देश की सेवा ही उनके लिए सर्वोत्तम सम्मान था ।

३. नीचे लिखे शब्दों की सहायता से वाक्यों के खाली स्थान भरो:
(स्वर्णकाल, वैभव-संपन्न, आश्चर्यचकित, जिज्ञासाएँ)

(I) केवल एक प्रश्न के उत्तर से मेरी सारी..... शांत हो गई हैं ।
(ii) चंद्रगुप्त मौर्य का शासन काल भारतीय इतिहास का..... था ।
(iii) इतने विराट और ..... राष्ट्र का महामंत्री एक झोंपड़ी में रहता है ।
(iv) मेगस्थानीज़ यह सुनकर ..... हो गया ।

४. नीचे लिखे कथन किसके हैं ।

(i) वे महामंत्री ही थे, जिनके पास हम आप के साथ गये थे ।
(ii) जिज्ञासाएँ तो आपसे बहुत-सी हैं, लेकिन अब एक नई जिज्ञासा उत्पन्न कर दी आपने ।
(iii) निजी कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्पत्ति का उपयोग करना तो घोर अपराध है।

भाषा-ज्ञान :

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति का नाम बताते हैं उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

१. पाठ में आए हुए व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द चुनो और उनके बारे में पाँच-पाँच पंक्तियाँ लिखो ।

जो संज्ञा शब्द व्यक्तियों, वस्तुओं आदि की पूरी जाति को बताते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे- मनुष्य, किताब, आश्रम, गाय, घर, कोयल, शिक्षक, लेखक,मंत्री आदि।

पाठ में आए हुए कोई भी पाँच जातिवाचक संज्ञा शब्दों से वाक्य बनाओ ।

३. उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे शब्दों से नये शब्द बनाओ और उनके अर्थ लिखो:

उदाहरण: भारत-भारतीय = भारत का, भारत से संबंधित

(I) राष्ट्र -

(ii) शासक -

(iii) दर्शन -

४. नीचे दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द पाठ से चुनो:

(I) काया - ..... (ख) राजा - .....

(ii) समान - ..... (क) हस्त - .....

(iii) तीव्र - ..... (च) दिन - .....

शिक्षक से:

चाणक्य के कार्य-कलाप का ज्ञान छात्रों को कराएँ

चाणक्य के जीवन एवं आज के भोगवादी जीवन की तुलना करके छात्रों को परिचित कराएँ ।

चाणक्य के चरित्र पर कक्षा में चर्चा करें ।

❖ ❖ ❖